International Journal of Arts & Education Research

वर्तमान भारतीय शिक्षा में सांख्य दर्शन का महत्व एवं उसकी उपादेयता

अश्विनी कुमार शर्मा *[1]

[1]शोधकर्त्ता, सांई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड।

डॉ0 एनी बेसेण्ट के अनुसार - शिक्षा द्वारा बालक की सभी आन्तरिक क्षमताओं को तथा उसकी प्रकृति के प्रत्येक पहलू को बाहर लाना है, जिसमें उनमें बौद्धिक तथा आध्यात्मिक तौर पर शक्ति प्राप्त हो सके । ताकि वह अपने कॉलेज जीवन की समाप्ति पर एक उपयोगी, देशभक्त, पवित्र व सज्जन व्यक्ति बन सके।

इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ आध्यात्मिक जगत से भी सम्बन्ध स्थापित करती है। शिक्षा के प्रति महर्शि कपिल का दृश्टिकोण आध्यात्मिक तथा मनावैज्ञानिक का मानव में समुचित विकास है, जिसका प्रादुर्भाव एवं सामाजिक प्रसार मानव मात्र में िनक्षा के द्वारा ही हो सकता है। अतः मूल्यपरक शिक्षा का ही मानव जीवन मे एक मात्र महत्व हैं।

सामाजिक नियमों व व्यवस्थाओं का उंल्लघन करने में सम्प्रति मनुश्य स्वमात्र संकोच नही कर रहा है। प्रदर्शन, तोड़-फोड़, हिंसात्मक विद्रोह ताकि आंतक हमारे जीवन में हर क्षण तनाव तथा भय उत्पन्न करते रहते है। काम, क्रोध और लोभ के कारण नरसंहार सामान्य कृत्य होता जा रहा है। आप की युवा पीढ़ी प्राय मादक द्रव्यों के सेवन से जीवन मार्ग में भटकती जा रही है। मानव जाति तथाकथित विकास के नाम पर अपने सर्वनाश का मार्ग प्रशस्त कर रही है आजकल हम अद्य:पवित्र मूल्यों के पीछे ही लिप्सा वश भागते हुए विनाश की ओर अग्रसर हो रहे है। मूल्यो में गिरावट के कारण ही सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक तथा वैयक्तिक जीवन में अनेक कठिनाइयॉ आज सार्वजनिक समस्या बन गयी है और मूल्यों का ह्ास हो रहा है।

इन मूल्यों को कायम करने के लिए शिक्षा नीति में सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान का छात्र की भावी समाज का निर्माता है अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनमें शैक्षिक व सामाजिक मूल्यों का विकास तथा शिक्षा में गिरावट रोकने के लिए मूल्य परक शिक्षा की आव-यकता है।

21वी सदी में मूल्यपरक शिक्षा की आव-यकता अत्याधिक प्रतीत हो रही है क्योकि इसके अभाव में किसी भी राश्ट्र की उन्नति संभव नही हो सकती । महर्शि कपिल जो सांख्य दर्शन के ज्ञाता और विश्णु भगवान के

*Corresponding Author

पॉचवे अवतार व नारद के बडे भ्राता माने जाते है, के द्वारा प्रदत्त ःैक्षिक विचारों में इन्ही मूल्य परक निक्षा पद्धति की व्यवस्था है जो वर्तमान भारत को अधिक सगुन्नत करने में सहायक सिद्ध हो सकती है। उन्होने सभी सामाजिक कार्यो का मूलाधार शिक्षा को ही माना और सामाजिक क्रिया-कलापों की शैक्षिक व्याख्या को प्रस्तुत किया । उन्होने नारी शिक्षा पर विनेश बल दिया । नारी निक्षा को ही राश्ट्र के उत्थान के लिए उन्होने सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना।

वर्तमान भारतीय परिवेना में हमें आदर्श महर्शि कपिल के आदर्नो का अनुकरण करना समीचीन होगा। उनके आदर्नो का पालन करने में ही हमारी संस्कृति और परम्परा की रक्षा भली-भॉति हो सकेगी। यदि भारतीय समाज में मूल्य परक निक्षा को बढ़ावा महर्शि के शैक्षिक विचारों के प्रसार से मिलता है तो प्रस्तुत अध्ययन की उपादेयता एवं महत्व स्वंय सिद्ध जाऐगी।

सांख्य दर्शन के अध्ययन का उद्देश्यः-

इस दर्शन के अध्ययन हेतु निम्नलिखित उददेश्य निर्धारित किये जाने चाहिए।

1. मूल्य परक शिक्षा की आवश्यकता का अध्ययन करना।
2. मूल्यों की शिक्षा एवं विद्यालयीकरण का अध्ययन करना।
3. मूल्यों के विकास, समाज एवं शिक्षा दर्शन का अध्ययन करना।
4. महर्शि कपिल एवं मूल्यपरक शिक्षा का विवेचन करना।
5. महर्शि कपिल के शिक्षा विशयक विचारों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासगिकता का अध्ययन करना।
6. महर्शि कपिल के शिक्षा दर्शन की व्यापकता और उसकी आधुनिक शिक्षा पर उपादेयता का अध्ययन करना।
7. महर्शि कपिल के शिक्षा दर्शन का वर्तमान निक्षा पद्धति से तुलनात्मक अध्ययन करना।

इन उद्देश्यों के आधार पर कार्यों को करने से हमें सफलता प्राप्त हो सकती है और कुछ सम्भावित निश्कर्शों को प्राप्त किया जा सकता है। इन प्रस्तावित शोध कार्यों के लिये समावित निश्कर्श निम्न प्रकार से हैं :-

1. गाजियाबाद के इण्टर कॉलिज स्तर के विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा संचालित हो रही है।

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शोध क्षेत्र के प्रारम्भिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं में मूल्यपरक शिक्षा की अवचेतना में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. गाजियाबाद में कार्यरत f्क्षकों को शासन स्तर से समय-समय इस विशय से सम्बन्धित प्रशिक्षण दिये जा रहे हैं।
5. प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा अधिक गुणवत्तापूर्ण मूल्यपरक शिक्षा विद्यार्थियों को दी जा रही है।
6. शोध क्षेत्र के विद्यालयों में मूल्यपरक शिक्षा का सतत् मूल्यांकन किया जा रहा है।
7. मूल्यों के विकास में परिवार, समाज का योगदान प्राप्त हो रहा है।
8. महर्शि कपिल के शिक्षा विशयक विचार आधुनिक परिपेक्ष्य में प्रासांगिक है।

अन्त में हम सकते हैं कि सांख्य दर्शन के आधार पर वर्तमान भारतीय f्क्षा के क्षेत्र में नवीन विकास किये जा सकते हैं तथा अध्यापकों को भी अपने कर्त्तव्यों मूल्यों का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ताकि वह एक सभ्य और उच्च राश्ट्र का निर्माण कर सकें और अपने कार्यों को पूर्ण निश्ठा से करते हुए मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

	कल्याण	योगांक गीताप्रेस, (वर्श 10,अंक 2,25) 1992
2	तैत्तिरीयोनि-iद्	कल्याण उपनिशद अंक, गीताप्रेस गोरखपुर
3	छान्दोग्योपनिशद	कल्याण उपनिशद अंक, गीताप्रेस गोरखपुर
4	श्रीमद् भागवत्गीता	कल्याण गीता-तत्वाइक टीकाकार जयदयाल गोयनदका गीताप्रेस गोरखपुर,संवत 2048
5	स्मारिका	1972, भारतीय लोक परिशद्
6	आचार्य बलदेव उपाध्याय	भारतीय द-र्नि
7	शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त	श्री एस0डी0त्यागी, पी0डी0पाठक, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

IJAER

Copyright © 2012 Published by IJAER. All rights reserved.

8	चौधरी सत्यनारायण	गंगासार व चार धाम माहात्म्य्
9	मुसलगाँवकर डा0 गजानन :ाास्त्री	साँख्य तत्व कौमुदी
10	सुधाशुं जी महाराज	जीवन संचेतना-दिसम्बर 09
11	महेश चन्द्र शर्मा	प्रस्थान चतुश्य में भारतीय द-र्ान
12	चन्द्रधर शर्मा	भारतीय दर्शन
13	रामशक्ल पाण्डेय	भारतीय दर्शन
14	उमेश चन्द्र(उमे-ा कुमार)	भारतीय दर्शन
15	एस0सी0 चट्टोपाध्याय	भारतीय दर्शन
16	डा0 लक्ष्मीकान्त ओड.	भारतीय दर्शन
17	डा0 नरेन्द्र सिंह :ाास्त्री एवं डा0 हरिदत्त :ाास्त्री	भारतीय दर्शन शास्त्र का इतिहास
18	डा0 भटनाकर, श्रीमती रत्नादेव	ज्ञान मीमांशा और तत्व मीमांशा
19	डा0 आर0 ए0 शर्मा	तत्व मीमाशा, ज्ञान मीमांशा, मूल्य मीमांशा एवं शिक्षा
20	स्वामी राम सुख दास	गीता प्रबोधनी, गीता प्रेस गोरखपुर
21	प्रो0 हरिन्द्र सिंह सिन्हा	भारतीय दर्शन की रूप रेखा
22	मणि शर्मा	समकालीन भारतीय शिक्षा दर्शन
23	रमन बिहारी लाल	शिक्षा के दार्शिनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
24	राम शुक्ल पाण्डेय	उदयीमान भारतीय समाज में शिक्षक
25	रमाशंकर भट्टाचार्य	सांख्य तत्व कौमुदी

IJAER

26	दिनेश राय द्विवेदी	सांख्य का सार
27	सांख्य दर्शन	ीजजचरू ध्धीपय इतंरकपेबवअमतलण्वतह ध्पदकमगण चीचघ ज्पजसमत्र ःमवः4ःइ8ः मवः4
28	सांख्य दर्शन	ीजजचरूध्ध्ूण्उंदजतंण्वतहण्पदध्लवरंध्उलूमइध्पदकपंद चीपसवेवचील ीपदकप ीजउ
29	सांख्य दर्शन	ीजजचरूध्ध्दपूमइपचमकपसनंण्वतहध्नसपामःमवः4ण्लंकःमवः4ःमवःण्ण
30	सांख्य दर्शन	ीजजचरूध्ध्ूण्ंतलेंउंररंउदंवितएवतहध्ेंदीां कंतेंद ीनउ
31	सांख्य दर्शन से दुखों का निवारण	ीजजचरूध्ध्पदण्रंहतंदण्लीववण्बवउ ध्कींतउध्ध्चंहमत्रंतजपबसम –बंजमहवतलत्र108 ंतजपबसम
32	सांख्य दर्शन	ीजजचरूध्ध्ेतपचतंउदंजीहलवहंदचममजीण्वतहध्ेंदीलं कंतेंद
33	सांख्य दर्शन	ीजजचरूध्ध्ेंजलहपण्इसवहे चवजण्बवउध्2009ध्10ध्इसवह चवतजण्10 ीजउस
34	गुरू शिष्य और धर्म की महत्ता	आर. ए. शर्मा

IJAER